किये बिना कुछ भी अंगीकार नहीं करते। इसलिए वे भक्तगण श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, आदि भक्ति के अलग-अलग साधनों के रूप में नित्यप्रति यज्ञ करते रहते हैं। इन यज्ञों के प्रभाव से वे जगत् के सम्पूर्ण पापमय संगदोष से मुक्त रहते हैं, वरन् त्रिभुवन को ही पावन कर देते हैं। दूसरी ओर, जो इन्द्रियतृप्ति के लिए भोजन बनाते हैं,—वे मनुष्य चोर ही नहीं हैं, वरन् सब प्रकार के पाप को ही खाते हैं। पापाचरण एवं चोरी करने वाला मनुष्य किस प्रकार सुखी होगा? यह कभी सम्भव नहीं। अतः जनता पूर्णानन्द का आस्वादन करे, इसके लिए जनसाधारण में पूर्णतया कृष्णभावना-भावित होकर संकीर्तन यज्ञ करने की सुगम विधि का प्रचार-प्रचार करना चाहिए। इसके बिना संसार में कभी सुख-शान्ति नहीं हो सकती।

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।१४।।

अन्नात्=अन्न से; **भवन्ति**=उत्पन्न होते हैं; **भूतानि**=प्राकृत-कलेवर; **पर्जन्यात्**=वर्षा से; **अन्न**=अन्न; **संभवः**=उत्पन्न होता है; **यज्ञात्**=यज्ञ द्वारा; **भवति**=होती है; **पर्जन्यः**=वर्षा; **यज्ञः**=यज्ञ; **कर्म**=स्वधर्मरूप कर्म से; **समुद्भवः**=प्रकट होता है।

अनुवाद

सब प्राणी अन्न से जीवन धारण करते हैं और अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है। वर्षा की उत्पत्ति यज्ञ से होती है तथा यज्ञ स्वधर्म से प्रकट है।।१४।।

तात्पर्य

श्रीमद्भगवद्गीता के महिमामय भाष्यकर श्रील बलदेव विद्याभूषण का कथन है: **ये इन्द्राद्यङ्गतयावस्थितं यज्ञं सर्वेश्वरं विष्णुमभ्यर्च्य तच्छेषमश्नन्ति तेन तद्देह यात्रां सम्पादयन्ति, ते सन्तः सर्वेश्वरस्य भक्ताः सर्वकिल्बिषैर्नादि-कालविवृद्धैरात्मानुभव प्रतिबन्धकैर्निखिलैः पापैर्विमुच्यन्ते।** 'यज्ञपुरुष अथवा **'यज्ञभोक्ता'** नामक परमेश्वर श्रीकृष्ण अखिल देवनिकाय के अधीश्वर हैं। जिस प्रकार विभिन्न अंग सम्पूर्ण शरीर की सेवा करते हैं, उसी भाँति ये सब देवता श्रीकृष्ण की सेवा में तत्पर हैं। श्रीकृष्ण द्वारा अधिकारासीन इन्द्र, चन्द्र, वरुण, प्रभृति देवता प्राकृत-जगत् के व्यवस्थापक हैं। वेदों में इनके निमित्त यज्ञानुष्ठान का निर्देश है, जिससे तुष्ट होकर ये अन्न की उत्पत्ति के लिए पर्याप्त वायु, प्रकाश तथा जल प्रदान करें। परन्तु श्रीकृष्ण की आराधना करने से उनके विभिन्न अंग-स्वरूप देवताओं की आराधना अपने-आप हो जाती है; देवताओं की पृथक् उपासना की कोई आवश्यकता नहीं रहती। कृष्णभावनाभावित भक्त इसी हेतु से प्रेरित होकर श्रीकृष्ण को अन्न निवेदित करके ही भोजन करते हैं। इस पद्धति से शरीर का भक्तिवर्धक परिपोषण होता है। भगवत्प्रसाद-ग्रहण से देह के पिछले पाप कर्मफल ही नष्ट नहीं होते, वरन् सब प्रकार के सांसारिक विकारों से भी शरीर मुक्त हो जाता है। संचारी रोग के व्याप्त होने पर रोगाणुरोधक औषधी के मसूरण के द्वारा मनुष्य अपनी रक्षा करता है। इसी भाँति,